सिद्धयोग पथ पर स्वाध्याय का अभ्यास

श्रीविष्णुसहस्रनाम से एक अंश

श्रीविष्णुसहस्रनाम, उत्कृष्ट महाकाव्य महाभारत का एक अंश है। महाकाव्य के इस अंश में महान योद्धा भीष्म युद्धभूमि में घायल हो गए हैं। अपने पौत्र युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए भीष्म भगवान विष्णु की उपासना के लाभों का वर्णन करते हैं।

भीष्म जी ने कहा :

जगत के प्रभु, देवों के देव, अनन्त, पुरुषोत्तम भगवान की उनके सहस्र नामों द्वारा स्तुति करने से एक मनुष्य का सदैव कल्याण होता है।

तथा सतत भक्तिपूर्वक उस अविनाशी पुरुष की आराधना करने से; उनका ध्यान करने से, उनकी स्तुति गाने और केवल उन्हें नमस्कार करने से, पूजा करने वाला मनुष्य मुक्त हो जाता है।

जिनका न आदि है न अन्त, ऐसे भगवान विष्णु जो सर्वलोकों के महेश्वर हैं, जगत के साक्षी हैं, उन देव की निरन्तर स्तुति करने से मनुष्य सब दुःखों के पार हो जाता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम : श्लोक ६-८
स्वाध्याय सुधा से लिया गया [१९९४ के हिन्दी संस्करण का छठा पुनर्मुद्रण २०१६ में कॉपीराइट धारक से प्राप्त लाइसेंस के अन्तर्गत, चित्शक्ति पब्लिकेशन्स [चित्शक्ति ट्रस्ट का एक प्रभाग], चेन्नई द्वारा प्रकाशित - पृष्ठ ८१-८२
क़वर डिज़ाइन और लेआउट - हाइमे आ. कस्तन्येदा
© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।